# अकबरी दरबार के हिंदी कवि

**डॉ. लियाकत मियाभाई शेख**
लोकसेवा कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

मध्ययुगीन मुगल सम्राटों में 'जलालुदीन मुहम्मद अकबर' का नाम भारत के महान शासकों के रुप में सर्वोपरी है। अकबर का व्यक्तित्व अद्वितीय है। अकबर विद्वानों का आदर करता था तथा वह स्वयं विद्यानुरागी और प्रबुद्ध शासक था। वह साहित्य, कला और संस्कृति का महान वाहक, दानशील वृति का उदार शासक था। वास्तव में अकबर प्रतिभावों का उन्नायक, रक्षक और पोषक था। उसने अपने राज्य में श्रेष्ठ कलाकारों और सुकवियों को आश्रय दिया था। उसके दाबार में विद्वान और गुणिजनों का सम्मान होता था दरबार के नवरत्न गुणवान और प्रतिभा संपन्न व्यक्ति थे। इन नवरत्नों में अग्रगण्य तानसेन, राजा बीरबल, राज टोडरमल, अब्दुर्रहीम खानखाना आदि की रचनाओं का हिदी काव्य-जगत् में अत्यंत महत्त्वपूर्ण तथा विशिष्ट स्थान है। नवरत्नो के अतिरिक्त दरबार के अनेक प्रतिष्ठित पदाधिकारियों तथा राज पुरुषों की भी कविता में विशेष रुचि थी। इनमें से अधिकांश हिंदी काव्य के प्रेमी ही नहीं बल्कि उच्च कोटि के कवि और लेखक भी थे। भारत के राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक इतिहास मे अकबर का चरित्र एवं शासनकाल स्वर्णाक्षरों से लिखा गया है। अकबर की राजनीतिक उदारता, धार्मिक सार्वभौमिकता, सदाशयता और सहिष्णुता द्वारा कला के समस्त पक्षों को एक नया प्रोत्साहन मिला, परिणामस्वरुप साहित्य एवं कला की दृष्टि को इनका शासन काल बड़ा ही समृद्ध रहा है। अकबर का दरबार नवरत्न और सभी प्रसिद्ध एवं गणमान्य, धनी, गुणी साहित्यिकों का प्रकाश पुंज रहा है। यह शिल्प, वास्तु, चित्र काव्यादि अन्य कलाओं के पुनरुद्धार तथा अभ्युदय का युग था। इस युग में हिंदी काव्य का अभूतपूर्व उत्कर्ष हुआ। अकबर फारसी के साथ-साथ हिंदी कवियों का भी बड़ा सम्मान करता था। अकबर के संबंध में रामचंद्र वर्मा लिखते है - 'विद्वानों धर्मज्ञों, अमीरों, कवियों और गायकों आदि के अलग-अलग वर्ग बनाकर अकबर रात के समय दरबार में अधिवेशन कराता था।'[१] अकबर का दरबार उच्चकोटि के हिंदी कवियों, इतिहासकारों, दार्शनिको आदि से गौरवान्वित था। अकबर की उदार नीति और हिंदी प्रेम के कारण ही इस काल में हिंदी फूली-फलीं। डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी लिखते है - 'अकबर के शासन में फारसी दरबार की राजभाषा अवश्य थी किंतु नित्य के कार्य व्यवहार और विचारों के आदान-प्रदान के लिए दरबारी तथा अन्य लोगों को जनभाषा हिंदी का ही आश्रय लेना पड़ता था।'[२] अकबर केवल कवियों और साहित्यकारों का आश्रयदाता ही नहीं था बल्कि, वह स्वयं हिंदी का उत्तम कवि था। जब शासक ही स्वयं हिंदी कविता में इतनी रुचि रखता हो तो ऐसी स्थिती में उसके राज्य में हिंदी के लिए पोषक वातावरण निर्माण होना काई आश्चर्य की बात नही है। इस कारण दरबार के अंतर्गत हिंदी कवियों को भी समुचित सम्मान और अवसर मिला। इन कवियों में रहीम, नरहरी, गंग, बीरबल, तानसेन, पृथ्वीराज, मनोहर कवि, राजा टोडरमल, सूरदास, मदन मोहन, राजा आसकरण, चतुर्भुजदास, दुरसाजी, होलशय, करनेश, महात्मा सूरदास, कुंभनदास, व्यास आदि अनेक हिंदी कवियों ने अकबरी दरबार के गौरव को बढ़ाया। सारांश रुप में कहा जा सकता है कि अकबरी दरबार का हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में बहुत बड़ा योगदान रहा है।

अकबर स्वयं कला-गुणों का पोषक शासक रहा है, उसके काव्यानुराग के कारण ही दरबार में कवियों-कलाकारों का तांता लगा रहता। अकबर के दरबार में राज्याश्रीत स्थायी कवि समुदाय तथा अवसर विशेष पर आने वाले अतिथी कवियों की संख्या भी पर्याप्त थी इन कवियों को अध्ययन सुविधा हेतु दो भागों में विभाजित

किया जा सकता है - १) स्थायी कवि २) अतिथि कवि। स्थायी कवियों में अकबर दरबार के मंत्री नवरत्न, तथा विश्वासपात्र राजपुरुषों का अंतर्भाव होता है। इनमें कविवर्य नरहरि सम्राट अकबर के कृपापात्र ही नहीं बल्कि एक अनुभवी मार्गदर्शक भी थे। अकबर दरबार में नरहरि वयोवृद्ध और अत्यधिक सम्मानित कवि थे। आपका जन्म विद्वानों के मतभेदों के बावजुद 'रायबरेली' जिले के 'डलमऊ' तहसील के 'पखरौल' नामक गांव में संवत् १५६२ को तथा मृत्यु १६६७ में मानी गई है। कविवर्य नरहरि का संबंध अकबर के पूर्वजों से भी माना जाता है और यह भी मान्यता है कि इन्हें बाबर ने भी सम्मानित किया था। इनके तीन ग्रंथों का उल्लेख इतिहास ग्रंथों में मिलता है - १) रुक्मिणी मंगल २) छप्पय नीति ३) कवित्त संग्रह। नरहरि भक्तिकालीन कवि थे, उन्होंने लोकमर्यादा और आदर्श निर्माण के लिए अनेक छप्पय लिखे हैं। उन्होंने तत्कालीन समाज का अपने अनुभव के आधार पर चित्रण किया। वे समाज को नई दिशा और दृष्टि देने की भावना से काव्य-सृजन करते थे। नरहरि केवल दरबारी कवि नहीं थे बल्कि जन-कवि थे। उनकी रचनाओं में सीता स्वयंवर, राधाकृष्ण के रुप सौन्दर्य तथा गोपियों के विरह का वर्णन मिलता है, विरह की अभिव्यक्ति के साथ ही प्रकृति का सुंदर चित्रण इनकी कविता में दिखाई देता है।

**बीरबल :**

बीरबल अकबरी दरबार के नवरत्नों में बड़े ही वाक्चतुर और हाजिर जवाब राजकवि थे। इनके जीवन-वृत्त के संदर्भ में भी विद्वानों में मतैक्य नहीं है। मुंशी देवी प्रसाद ने अपनी पुस्तक 'राजा बीरबल' में लिखा है बीरबल का नाम 'ब्रह्मदास' और उनकी जाति ब्राह्मण थी।[३] कानपुर में एक साधारण कान्यकुब्ज ब्राह्मण 'गंगादास' के यहाँ इनका जन्म हुआ। जन्म तिथि और जन्म-स्थान को लेकर भी अलग-अलग मत प्रवाह है। यह सत्य है कि इन कवियों ने अपने विषय मे बहुत कम लिखा है। अन्य स्त्रोतों के माध्यम से इनके विषय में तथ्यों को समेटना होता है। इन विवादों से बचते हुए हमें इनके योगदान पर लक्ष्य केंद्रीत करना चाहिए। बीरबल की सर्वगुण संपन्नता से प्रभावित होकर इन्हे अकबर ने 'कविराय' 'मुल्कुलशोरा' एवं बुद्धिमान मंत्री आदि उपाधियों से सम्मानित किया। इतना ही नहीं बीरबल की न्यायप्रियता को देखकर इन्हे अकबर ने 'न्यायाधीश' के पद पर भी प्रतिष्ठित किया था।[४] मिश्रबंधु विनोद में लिखा है - 'बीरबल अकबर के सेनानायकों में से थे और युद्धों में भी जाते थे।'[५] वास्तव में बीरबल अकबरी दरबार के नवरत्नों में सबसे अधिक विश्वासपात्र तथा अकबर के मित्र थे। ग्रंथ तथा स्वतंत्र रुप में इनकी कोई रचना उपलब्ध नहीं होती, केवल फुटकल छंद ही यहाँ-वहाँ उपलब्ध होते है। मिश्रबंधु विनोद में लिखा है कि बीरबल सदैव कविता के प्रेमी रहे और ब्रजभाषा की बहुत अच्छि रचना करते थे। बीरबल की कविता में भक्ति और उपदेश की अधिकता थी इनके कई छंदों में कृष्ण की बाललीलाओं का वर्णन है। इन्होंने संयोग श्रृंगार और वियोग श्रृंगार के अत्यंत सुदर चित्र उपस्थित किये है। इनके उपदेश और शिक्षा संबंधी छंद उच्च कोटि के बन पडे है। नि:संदेह वे अकबरी दरबार के नवरत्नों में एक अमूल्य रत्न थे।

**तानसेन :**

तानसेन अकबर दरबार के नवरत्नों में से एक प्रसिद्ध संगीतज्ञ और गायक कवि थे। तानसेन के जीवन के संदर्भ कुछ महत्त्वपूर्ण तथा ऐतिहासिक ग्रंथों, तत्कालीन कवियों की रचनाओं और कवि के आत्म-चरित्रिक उल्लेखों से प्रमाणित होता है, इन्ही तथ्यों के आधार किसी निष्कर्ष तक पहुचा जा सकता है। प्राप्त संदर्भो के आधार पर तानेसन का जन्म संवत १५७८ या १५८८ को ग्वालियार या ग्वालियर के समीप 'बेहट' गांव में माना जाता है। और इतिहासकार अबुलफजल के अनुसार इनकी मृत्यु १६४६ में हुई। 'तानसेन' यह इनकी उपाधि रही है। इनके मूल नाम को लेकर भी कई तर्क दिये जाते है। किंतु वे तानसेन नाम से ही अधिक प्रसिद्ध हुए है। इनका संबंध एक ब्राह्मण परिवार से रहा किंतु अकबर या गुरु गौस मुहमद के प्रभाव से इन्हों ने इस्लाम

धर्म स्वीकार कर लेने के प्रमाण मिलते है। इस संदर्भ में मिश्र बंधु लिखते है - 'तानसेन के धर्म परितवर्तन में उनके गुरु गौस मुहमद का प्रभाव ही सर्वोपरी था।'[६] इसमें कोई संदेह नहीं कि तानसेन अपने दौर के प्रसिद्ध गायक, संगीतज्ञ तथा उच्च कोटि के कवि भी थे। हिंदी इतिहास ग्रंथों में तानसेन के तीन ग्रंथों का उल्लेख मिलता है - १) संगीतसार, २) रागमाला, ३) गणेशस्त्रोत जो की उपलब्ध नहीं है। कहा जाता है कि तानसेन ने दो हजार से अधिक पदों की रचना की थी किंतु आज लगभग ४०० पद की प्राप्य है। ३०० पदों की 'संगीतसार' के अतिरिक्त तानसेन कृत कोई अन्य रचना उपलब्ध नहीं होती।[७] प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी ने तानसेन को हिंदी कवि के रुप में स्वीकार किया है। प्रसिद्ध इतिहासकार अबुलफज़ल लिखते है - 'तानसेन का काव्य रचना गौण था किंतु भक्ति भाव का प्रदर्शन उनका प्रधान लक्ष्य था आज इन्हीं कवियों की रचनाएँ हिंदी साहित्य की अमूल्य निधी है।'[८] तानसेन की रचनाओं में संगीत और गायन के अतिरिक्त कृष्ण की बाललीला, मुरलीलीला, राधा का रुप वर्णन, गोपी विरह आदि का प्रभावोत्पादक चित्रण हुआ है। तानसेन के पदों का भाव पक्ष अत्यंत व्यापक है। वास्तव में तानसेन एक उच्चकोटि के प्रतिभासंपन्न कवि थे।

**रहीम :**

'अब्दुर्रहीम खानखाना' हिंदी के उन लब्ध-प्रतिष्ठित महान् कवियों में से एक है, जो दरबारी, योद्धा, राजपुरुष होकर भी सच्चे जन कवि है। भारत के धर्म-निरपेक्ष वातावरण को बल प्रदान करने में मध्ययुगीन साधु, संतों और मुस्लिम कवियों, सूफी संतों का योगदान महत्त्वपूर्ण रहा है। इन कवियों में 'रहीम' का योगदान अमूल्य है। रहीम की गणना हिंदी के सर्वाधिक लोकप्रिय कवियों में होती है। रहीम की रचनाओं में कृष्ण के प्रति अनन्य भक्ति परिलक्षित होती है, जो उनके विराट व्यक्तित्व का निदर्शक है। उनका नीति परक काव्य जग-विख्यात है।

रहीम का जन्म लाहोर में गुरुवार १७ दिसंबर १५५६ ई. को हुआ और नाम 'अब्दुर्रहीम' रखा गया। इनके पिता का नाम बैरमखाँ और माता का नाम 'सुल्ताना बेगम' था। बैरमखाँ खानखाना सम्राट अकबर के अभिभावक थे। अकबर को स्थापित तथा प्रतिष्ठित करने में बैरमखाँ का योगदान अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण रहा है। बैरमखाँ की हत्या के पश्चात् अकबर ने उनके पुत्र 'अब्दुर्रहीम' की शिक्षा-दिक्षा, पालन-पोषण की उत्तम व्यवस्था की। स्वयं अकबर ने प्रसिद्ध विद्वान् 'मुल्लाह मुहम्मद अमीन' को रहीम का शिक्षक नियुक्त किया। अपने गुरु से उन्होंने अरबी, फारसी, तुर्की आदि भाषाएँ सीखी। रहीम में भारतीय भाषाओं को सीखने का अथाह उत्साह था। वे हिंदी और संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पंडीत थे। स्वयं रहीम विद्वानों और कवियों का आदर तथा सम्मान करते थे। रहीम स्वयं गुणी थे, दानी थे, बहुभाषाविद् थे, वीर सेनापति थे। उनके यहाँ अनेक कवि आश्रित थे। वे अपने युग के श्रेष्ठ सेनापति, प्रशासक, दानवीर, कुटनीतिज्ञ, बहुभाषाविद, कला पारखी, श्रेष्ठ कवि, विद्वान और शिक्षक थे। जन्म से मुस्लिम होकर भी वे पूर्णतः भारतीय थे इसीलिए उनकी तुलना कवियों में कल्पतारु से, दानियों में कर्ण से, गुणवानों में भोज से की जाती है। उनका अप्रतिम व्यक्तित्व सभी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता था। उनमें जातिभेद, वर्णभेद, धर्मभेद की लेशमात्र की भावना भी न थी। रहीम में एक कवि की कोमलता और सेनापति की दृढता समाहित थी।

रहीम ने अपने ७२ वर्षों के जीवन-काल मे अनेक ग्रंथों रचना की। इनकी प्रमुख रचनाएँ हैं - १) रहीम सतसई, २) बरवै नायिका भेद, ३) रास-पंचाध्यायी, ४)मदनाष्टक, ५) दीवान फारसी कविताओं का संग्रह, ६) वाकयात बाबरी का फारसी अनुवाद, ७)श्रृंगार सोरठा, ८) दोहावली, ९) नगर शोभा, १०) शतरंज-शतक, ११) खेट कौतुकम आदि प्रसिद्ध है। इन ग्रंथों के अलावा भी रहीम ने और अधिक ग्रंथों की रचना की होगी लेकिन वे उपलब्ध नहीं है। इस दिशा में अनुसंधान की आवश्यकता है। सार रुप में कहा जा सकता है कि रहीम का व्यक्तित्व एवं कृतित्व सर्वगुण तथा समृद्ध रहा है। रहीम एक सफल सेनापति, प्रशासक, दानवीर,

आश्रयदाता, बहुभाषविद, कलापोषक, कवि, विद्वान तथा सफल राजनीतिज्ञ थे। 'चाँद बीबी जैसी बीरांगना, मजफ्फर जैसे साहसी, हब्शी अम्बर जैसे दुर्धर्ष तथा मिर्जा जैसे कपटी एवं धूर्त को वश में करना केवल रहीम के वश की बात थी। शांतिपूर्ण समझौते करना एवं् कराना, अनावश्यक हत्याओं से बचना और तन, धन की बरबादी न होने देना उनकी सुद्ध नीति के आवश्यक अंग थे।' रहीम प्रणीत श्रृंगार काव्य नितांत मौलिक, मर्यादीत एवं् भाव्यव्यंजक है। उनके श्रृंगार काव्य में भारतीय भावना एवं लोकस्तुत संस्कृति की छाप स्पष्ट दिखाई देती है। रहीम ने अपनी सीमाओं में रहकर श्रृंगार वर्णन किया। श्रृंगार परक काव्य में भी नीति तत्त्व का आरोपण करने में रहीम को महारत हासिल थी। रहीम का श्रृंगार चित्रण अन्य कवि द्वारा वर्णित श्रृंगार काव्य से भिन्न और श्रेष्ठ है, उनके श्रृंगार में कहीं पर भी छीछलापन नहीं है।

रहीम का वियोग वर्णन यथार्थ परक अधिक है। रहीम के व्यक्तिगत जीवन में भी विरह एवं विषाद की अधिकता देखी जा सकती है। रहीम कृत विरह वर्णन में जनसाधारण की मनोदशा ही दिखाई देती है। वियोग अवस्था नर-नरेश सभी को व्याकुल कर देती है। रहीम के छ: श्रृंगार सोरठों में गोपियों का विरह वर्णन मिलता है। रहीम का विरह वर्णन स्वाभाविक और भावपूर्ण है। दोहें और बरवै जैसे छोटे छंदों में भी विरह के उत्कृष्ट भावों की अभिव्यक्ति रहीम के काव्य कौशल की परिचायक है।

रहीम मूलत: इस्लाम धर्मावलंबी होने से एक ईश्वर में विश्वास करते थे। रहीम का जन्म उस समय हुआ जबकि संपूर्ण भारत में भक्ति-भावना द्वारा दो धर्मो के बीच खाई को पाटने के प्रयास हो रहे थे। अकबर की धर्म नीति अनुकूल शिक्षा, संस्कृत भाषा ज्ञान, तुलसी के साथ मित्रता, गंग, तानसेन, बीरबल, नरहरी, सूरदास, मदनमोहन, टोडरमल, आदि भक्त कवियों की संगति के फलस्वरुप उदारमता मुसलमान रहीम के मन में भी सगुण भक्ति के प्रति प्रेम जागृत हुआ। 'रहीम की रचनाओं से अनन्य भक्ति, धार्मिक उदारता और हिंदू धर्म पद्धति के प्रति श्रृद्धा का भाव प्रकट होता है।' भारतीय आस्थाओं के प्रति उन्होंने भक्ति भाव प्रदर्शित किया वह अनुपम है। कृष्ण, राम, शिव आदि के भक्ति संबंधी छंद रहीम की रचनाओं में मिलते है। गोस्वामी तुलसीदास रहीम के मित्र थे। उन्होंने अपने छन्दों में अनेक स्थानों पर 'राम' का भी गुणगणन किया है। रहीम के काव्य का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि रहीम पर मध्ययुगीन संत साहित्य की समन्वयवादी दृष्टि तथा अकबर के संस्कारों की उदारवादी नीति की गहरी छाप दिखाई देती है। रहीम काव्य में वर्णित विषयों को देखकर उन्हें भारत का महान् समन्ववादी कहना ही उचित है।

**गंग :**

गंग अकबरी दरबार में स्थायी कवि के रुप में प्रतिष्ठित थे। कहा जाता है कि बीरबल और गंग कवि बालमित्र थे और बीरबल ने ही गंग को अकबर दरबार में राज्याश्रय दिलवाया था। डॉ. शिवसिंह सेंगर ने गंग का नाम गंगाप्रसाद ब्राह्मण लिखा है। 'गंग' अकबर दरबार के प्रसिद्ध कवि थे। इनके अतिरिक्त गंग नामक अन्य कई कवि भी हिंदी साहित्य में हो चुके है। नागरी प्रचारिणी सभा त्रैवार्षिक खोज रिपोर्ट में गंग द्वारा रचित तीन ग्रंथों का उल्लेख मिलता है 'गंग पदावली' गंग पच्चीसी और गंगरत्नावली किंतु आज ये ग्रंथ अप्राप्य है। वस्तुत: इन्होंने स्फुट रुप में छन्द रचना की थी। जिनका प्रामाणिक संकलन श्री बटेकृष्ण द्वारा संपादित 'गंग कवित' में हुआ है। मूलत: गंग कृष्ण भक्त कवि थे इन पर वल्लभ संप्रदाय का प्रभाव था। इनकी रचनाओं में कृष्ण लीलाओं का चित्रण अधिक हुआ है। कृष्ण की बाललीला, राधाकृष्ण की प्रेमगाथा आदि का हृदयग्राही वर्णन इनकी रचनाओं में मिलता है। इनकी कविता में श्रृंगार और वीर रस के बेजोड छंद देखे जा सकते है। इन्हें रहीम द्वारा एक छप्पय पर प्रसन्न होकर छत्तीस लाख रुपये और बीरबल द्वारा एक लाख रुपये पुरस्कार स्वरुप दिया जाना इनकी कविता की मौलिकता को सिद्ध करता है।

**पृथ्वीराज :**

कविवर्य पृथ्वीराज अकबर के कृपापात्र होने के कारण पृथ्वीराज प्राय: अकबरी दरबार में ही रहते थे। वे एक सच्चे देशभक्त कवि और हिंदी भाषा के विद्वान होने के साथ-साथ संस्कृत साहित्य, दर्शन, ज्योतिष, पिंगल, संगीतशास्त्र में पारंगत थे। पं. मोतीलाल मनोरिया के अनुसार 'गंग लहरी', दशरथ रावऊल, वासुदेव रावउत, श्यामलता, बेलि किशन आदि इनके प्रसिद्ध ग्रंथ है। हिंदुस्तानी अकादमी से इनकी बेलि किसन रुक्मिणीरी, श्रीकृष्ण रुक्मिणी, चरित्रप्रेम दीपिका नामक तीन रचनाएँ प्रकाशित की है। पृथ्वीराज स्वतंत्र विचार धारा के निर्भिक कवि थे स्वतंत्रता के सामने पृथ्वीराज की दृष्टि में राजसम्मान, राजवैभव और राज अधिकार का कोई मूल्य या महत्त्व नहीं। मान्यता है कि वल्लभ साम्प्रदायिक भक्ति में इनकी विशेष आस्था थी। इनके द्वारा डिंगल में लिखी हुई वीर रस की कविता का अपना विशिष्ठ महत्त्व है। इस भाषा में लिखी हुई संगीत तथा शृंगार विषयक इनकी कविता प्रसिद्ध है। इस भाषा में लिखी हुई संगीत तथा शृंगार विषयक इनकी कविता प्रसिद्ध है। भक्ति और शृंगार विषयक एक उदाहरण प्रस्तुत है -

प्रेम इकंगी नेम प्रेम गोपिन को गयों,
बचपन बिरह बिलाप सखी ताकि छपि छायो।
ज्ञान जोग बैराग मधुर उपदेसन भाख्यों,
भक्ति भाव अभिलाषा भुख बनितम मनु सख्यों[९]

**मनोहर कवि :**

मनोहर कवि अकबर के दरबार में मंत्री थे। अकबर ने इन्हें 'राय' की उपाधि प्रदान की थी। 'राय मनोहर' नाम से आप परिचित थे। राम मनोहर अकबर के विश्वास पात्र राजपुरुष रहे है। बुद्धि वैभव से संपन्न एक भावुक व्यक्ति थे। ये फारसी, संस्कृत और हिंदी भाषा के विद्वान थे। मूलत: ये फारसी के कवि थे। इनकी हिंदी रचनाओं पर फारसी का प्रभाव देखा जा सकता है मिश्रबंधु के अनुसार 'ये फारसी और संस्कृत भाषा के महाकवि थे।'[१०] 'शतप्रश्नोत्तरी' नामक इनकी एक रचना का उल्लेख मिलता है। इनकी कविता के संबंध में मिश्रबंधु लिखते है 'इनकी कविता बड़ी ही उदार, मधुर, सानुप्रास, भावपूर्ण और प्रशंसनीय है। इनका शृंगार विषयक उदाहरण प्रस्तुत हैं -

इंदू बदन नरगिस नयन संबुल वारे बार
उर कुंकुभ कोकिल बयन जोहि लरित लाजत मार।[११]

**राजा टोडरमल :**

राजा टोडरमल अकबर दरबार के वित्तमंत्री थे विशेषत: मालगुजारी विभाग का बंदोबस्त इन्हीं के अधिपत्य में था। अपनी कार्य कुशलता से इन्होंने राजस्व को बढ़ाया अत: अकबर इनका अत्यधिक सम्मान करते थे। इनकी कार्यकुशलता को देखकर अकबर ने इन्हें 'राजा' की उपाधि प्रदान की थी। महाजनी में बही खाता, हुंडी, चिट्ठी आदि लिखने का जो ढंग आजकाल प्रचलित है उसका श्रेय टोडरमल को ही जाता है। इनके द्वारा लिखे साहित्यिक ग्रंथ अप्राप्य है केवल कुछ छंद यहाँ-वहाँ प्रकाशित संग्रहों में दिखाई देते है। कहा जाता है कि इन्होंने गणित के संबंध में एक छोटी पुस्तक भी लिखी थी। राजा टोडरमल प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने प्रजा का ध्यान जनभाषा हिंदी से हटाकर फारसी की ओर आकृष्ट किया और सभी कार्यालयों में फारसी प्रचलित करवादी। 'इसी कारण हिंदी की प्रगति अवरुद्ध हो गयी'[१२] मूलत: ये राजपुरुष होने से इनका ध्यान साहित्य की अपेक्षा राजकीय व्यवहार पर ही अधिक रहा है। इनमें शासन व्यवस्था की योग्यता कुट-कुट कर भरी थी, इसी कारण वे अकबर के नवरत्नों में गणनीय थे ।

**सूरदास मदनमोहन :**

सूरदास मदनमोहन अकबर दरबार के प्रसिद्ध कवि रहे है। वे उत्तर भारत के 'संडीले' नामक स्थान के निवासी थे। ये अकबर दरबार की ओर से 'संडीले' के अमीन पद पर नियुक्त थे और साधु सेवा और दानवीर प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। इनकी कोई पूर्णाकार रचना उपलब्ध नहीं होती। कुछ फुटकर पद वैष्णव कीर्तन तथा हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में प्राप्त होते है। इनकी रचनाओं में कृष्णभक्ति के पद, राधाकृष्ण का प्रेम वर्णन, कृष्ण का वात्सल्य भाव और संगीत विषयक कुछ पद यत्र-तत्र बिखरे हुए मिलते है। यह एक स्वतंत्र चेत्ता उच्च कोटि के कवि माने जाते है।

**अकबर दरबार के अतिथि हिंदी कवि :**

अकबर की उदार नीतियों के चलते अनेक कवि, कलाकारों का आवागमन राज्य तथा दरबार में होता रहा है। कईयों का दरबार से सीधा संपर्क था तो कोई अकबर के सरदारों के संपर्क में थे। अकबर ने स्वयं सूरदास तथा कुंभनदास को अपने दरबार का निमंत्रण दिया किंतु स्वतंत्र चेता इन कवियों ने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाएँ रखा और वे दरबारी नहीं बन पाये किंतु इनका अकबर से संपर्क आवश्य रहा है। इन अतिथि हिंदी कवियों के संबंध में समग्र रुप से विस्तृत जानकारी तो उपलब्ध नहीं होती। ज्ञानस्त्रोतों से पता चलता है कि अकबर दरबार के अतिथि हिंदी कवियों में निम्न कवियों का नाम सम्मान के साथ लिया जा सकता है। इन अतिथि कवियों में दुरसाजी, होलराय, ब्रह्मभट्ट, करनेश, महात्मा सूरदास, कुम्भनदास, व्यास आदि प्रमुख है।

**१) दुरसाजी :**

दुरसाजी अपने दौर के प्रसिद्ध चारण कवि थे इनकी रचनाएँ डिंगल भाषा में प्राप्त होती है। इनके संदर्भ में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती। दुरसाजी अकबर के साथ-साथ अन्य राजाओं के भी संपर्क मे रहे है इनमें बीकानेर महाराज रायसिंह, जयपुर के महाराज मानसिंह, सिरोही के राजा राव सूरतान आदि उल्लेखनीय है। दुरसाजी स्वतंत्र प्रवृत्ति के कवि थे अत: वे दरबारी नहीं बन पायें।

**२) होलराय ब्रह्मभट्ट :**

अकबरी दरबार से इनका प्राय: संपर्क रहा है। अकबर से इन्हें पुरस्कार स्वरुप कुछ जमीन मिली थी, जिस पर उन्होंने होलपुर नामक गाँव बसाया था इनकी कोई रचना उपलब्ध नहीं होती, यत-तत्र कुछ पद अवश्य मिलते है। होलराय अकबर दरबार के अन्य राजपुरुषों के भी संपर्क में रहे है। इनमें खानखाना, टोडरमल, तानसेन, गंग, बीरबल तथा मानसिंह आदि कुछ प्रमुख है।

**राजा आसकरण :**

राजा आसकरण अकबर दरबार के लब्ध प्रतिष्ठित अतिथि हिंदी कवियों में से एक थे। वस्तुत: इनका संबंध अकबर दरबार के प्रभावशाली सामंतों तथा राजाओं में 'राजा' आसकरण का नाम उल्लेखनीय है। अकबर ने इनकी सेवाओं से प्रभावित हो इन्हें 'राजा' उपाधि दी थी। राजा आसकरण की कोई स्वतंत्र रचना उपलब्ध नहीं है। यहाँ-वहाँ इनके कुछ पद प्राप्त होते है। ये तानसेन, गोविन्द स्वामी, श्री गुसाई विठ्ठलनाथ के प्रभावस्वरुप कृष्ण भक्ति की ओर अग्रसर हुए। इनके पदों में कृष्ण के वात्सल्य भाव की अधिकता है। आसकरण की रचनाएं दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, कीर्तन संग्रह, वार्ता साहित्य आदि में दिखाई देती है।

**चतुर्भुजदास :**

चतुर्भुजदास अकबरी दरबार में एक हजार मासिक वेतन पानेवाले विद्यानुरागी विद्वान थे। अपनी विद्वत्ता के कारण ही वे अकबर के दरबार में अपनी जगह बनाने में सक्षम हुए। इनका 'द्वादशयश' नामक ग्रंथ प्राप्त होता

है। चतुर्भुजदास ने कृष्ण भक्ति विषय पद लिखें। अकबर के दरबार में रहते हुए वे बाद में 'वल्लभसंप्रदाय' में दिक्षित होकर गुसाई विट्ठलनाथ के साथ गोवर्धन जी की सेवा में लीन हुए।

**करनेश :**

कविवर्य 'करनेश बंदीजन' का अकबरी दरबार से संपर्क रहा है। इनकी तीन रचनाओं का नामोल्लेख मिलता है - १) करणाभरण, २) श्रृति भूषण, ३) भूप भूषण। अकबर दरबार के वरिष्ठ कवि 'नरहरि' से इनके घनिष्ठ संबंध थे।

**४) महात्मा सूरदास :**

महाकवि सूरदास अकबर के समकालीन स्वतंत्र चेतना से युक्त प्रसिद्ध भक्त कवि थे। कहा जाता है कि अकबर से इनका संपर्क आवश्य रहा किंतु इन्होंने अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाए रखा और सूरदास महाकवि के रुप में प्रसिद्ध हुए। दरबार की सेवा का प्रस्ताव इन्होंने विनम्रता के साथ अस्वीकार कर दिया। कृष्ण-भक्त कवियों में सूरदास का नाम विख्यात और सर्वोपरी है।

**५) कुम्भनदास :**

कुम्भनदास का भी अकबर से संपर्क आवश्य रहा है किंतु वे स्वतंत्र चेत्ता भक्त कवि थे। कवि कुंभनदास के सामने अकबर ने अपने दरबार की शोभा बढाने का प्रस्ताव रखा था किंतु उन्होंने यह कहकर की 'संतन कहा सीकरी सो काम'[१३] कहकर दरबार से दूर ही रहे। उनके लिए तो अपने गिरिधर ही सब कुछ थे और वे आजीवन उनकी भक्ति में लीन रहे।

**६) व्यास :**

अकबर दरबार के अतिथि कवि के रुप में कविवर्य व्यासजी का आजा-जाना लगा रहता था। इनके संबंध में भी अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है -

इसी प्रकार से तुलसीदास भी अकबर के समकालीन कवि रहे हैं। इन कवियों के अतिरिक्त चंद्रभान, अमृत, जैत, जगदीश, जोध, जगमग, आदि हिंदी कवियों का भी अकबर दरबार से संपर्क रहा है। किंतु इनके विषय में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं होती।

सारांश रुप में कहा जा सकता है कि अकबर की उदार नीतियों के कारण अकबर का दरबार कलाकारों, कवियों तथा साहित्यकारों से भरा हुआ दिखाई देता है। अकबर दरबार के इन हिंदी कवियों पर समुचित और समग्र रुप से संशोधन होने की आवश्यकता है। हिंदी साहित्य की श्रीवृद्धि में इनका योगदान अविस्मारणीय है। ये कवि दरबार के आश्रीत होकर भी साहित्य सृजन के लिए बंधन से मुक्त दिखायी देते है। मध्ययुगीन दरबारी चाटुकारिता इन कवियों में नही दिखायी देती। भावाभिव्यक्ति इन कवियों का मुख्य लक्ष्य रहा है।

**संदर्भ ग्रंथ सूची :**

१) डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल, अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ. १५६, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, १९५०।
२) डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी, नॅशनल प्लैग एण्ड अदर एसेज, पृ.१८०-१८१।
३) मुंशी देवी प्रसाद, राजा बीरबल, पृ. ४३।
४) डॉ. सरयू प्रसाद अग्रवाल, अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ.८५, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, १९५०।
५) डॉ. बी. कैलाश सिंह, अकबरी दरबार के हिंदी - कवि और रहीम, पृ. ४२, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपूर, प्रथम संस्करण, १९९१।
६) मिश्रबंधु, मिश्रबंधु-विनोद-भाग-१, पृ.२९३, गंगा ग्रथागार, इलहाबाद, १९५७।

७) मिश्रबंधु, मिश्रबंधु - विनोद-भाग-१, पृ.२२६, गंगा ग्रथागार, इलहाबाद, १९५७।
८) सरयू प्रसाद अग्रवाल, अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ.३८०, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, १९५०।
९) मिश्रबंधु, मिश्रबंधु - विनोद, पृ.२८४, गंगा ग्रथागार, इलहाबाद, १९५७।
१०) आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, पृ.२४८।
११) सरयू प्रसाद अग्रवाल, अकबरी दरबार के हिंदी कवि, पृ. ५२, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, १९५०।
१२) स्वामी गोकुलनाथ, दो सौ बावन वैष्णवन की वार्ता, पृ.३२३।

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com